

## Shrimad Rajchandraji

Shrimad Rajchandraji was born to Smt. Devba and Shri Ravjibhai on Kartik Purnima in V.S. 1924 - 9th November, 1867 at Vavana (Gujarat, India). At the young age of 7, on witnessing the burning pyre of an acquaintance, he underwent unprecedented mental churning thus attaining "Jatismaranjan" (a recollection of several past lives). As a child, Shrimadji showed remarkable grasping power and memory at school and completed the study of 7 academic years in just 2 years. As a teenager, he mastered almost all the eminent treatises on philosophy with the sole purpose of discovering the Ultimate Truth.

Shrimadji was endowed with many extraordinary mental and intellectual powers. Despite a sentiment of detachment and a burning desire for renunciation, at the age of 20, he had to tie the knot and engage in business.

A consciousness deeply immersed in the Truth, he experienced a powerful emotional spiritual state of being, self-realisation, at the age of 23. He kept this flame alive even amidst worldly activities. After the age of 28, he began to spend 4 to 6 months of the year in the seclusion of jungles, mountains and remote places in Gujarat, effortlessly leading an austere life. Shrimadji's health deteriorated in the year 1900 due to a severe illness from which he did not recover. In spite of extreme physical discomfort, his persona radiated bliss. His soul left his mortal body on the day of Chaitra Vad Pancham, V.S. 1957 - 9th April, 1901 at Rajkot. In the short span of 33 years, he not only soared high in the spiritual skies, but was also instrumental in directing many others on the path of enlightenment.

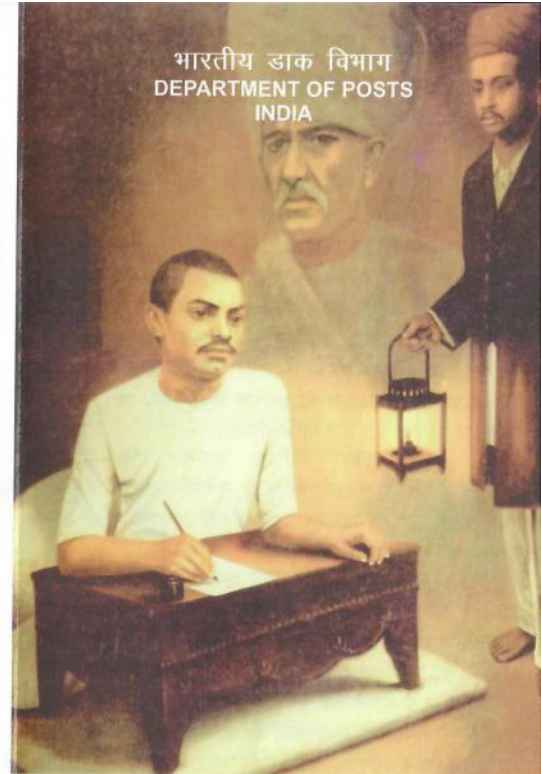
Among those who came in contact with Shrimadji was the Father of the Nation, Mahatma Gandhi. Their association continued through correspondence even after Gandhiji moved to South Africa. This close association contributed a great deal in moulding Gandhiji's philosophy. He attributes his strong foundation of truth, non-violence and compassion, to Shrimadji. Gandhiji mentions Shrimadji in his writings and in his autobiography, 'The Story of My Experiments with Truth.' Mahatma Gandhi says, "This man has won my heart in spiritual matters and no one else has ever made on me the same impression. I have said elsewhere that besides Kavi (Shrimadji), Ruskin and Tolstoy have contributed in forming my intrinsic character; but Kavi has had a more profound effect because I had come in personal and intimate contact with him." (Modern Review, June 1930)

His invaluable writings have been compiled and published in the volume, 'Shrimad Rajchandra.' The poetic composition 'Shri Atmasiddhi Shastra', is one of Shrimadji's finest works. Penned in a single sitting of only 1.5-2 hours, its 142 verses form a masterpiece in philosophical literature. There are also other treatises, poetic compositions, articles, aphorisms and his personal notes reflecting his deep contemplation and profound inner state. A large part of Shrimadji's legacy is his letters written to seekers.

Department of Posts is pleased to release Commemorative Postage Stamp on Shrimad Rajchandraji.

### Credits:-

Text : Based on the material received from proponent  
Stamp /FDC/Brochure/ : Sh. Brahm Prakash  
Cancellation Cachet



श्रीमद् राजचंद्रजी  
Shrimad Rajchandraji

विवरणिका  
BROCHURE

## श्रीमद् राजचंद्रजी

श्रीमद् राजचंद्रजी का जन्म श्रीमती देवबा और श्री रवजीभाई के घर विक्रमी संवत् 1924 की कार्तिक पूर्णिमा अर्थात् दिनांक 9 नवम्बर, 1867 को ववाणिया, गुजरात, भारत में हुआ था। 7 वर्ष की बाल्यावस्था में, एक निकट संबंधी की जलती हुई चिता को देखकर उनके भीतर एक अभूतपूर्व मानसिक व्याकुलता की स्थिति पैदा हुई, इस प्रकार उन्हें "जातिस्मरणज्ञान" (पिछले कई जन्मों का स्मरण) हुआ। बाल्यावस्था में, श्रीमद्जी ने पाठशाला में अद्भुत ग्रहणशक्ति एवं स्मरणशक्ति का परिचय दिया तथा उन्होंने मात्र 2 वर्षों में ही 7 शैक्षणिक वर्षों का अध्ययन पूरा कर लिया। किशोरावस्था में, उन्होंने परम सत्य की खोज के मूल उद्देश्य से दर्शनशास्त्र के लगभग सभी प्रमुख शोध-प्रबंधों का गहन अध्ययन कर ज्ञान अर्जित किया।

श्रीमद्जी अनेक विशिष्ट मानसिक तथा बौद्धिक शक्तियों से परिपूर्ण थे। अनासक्ति के मनोभाव तथा सत्यास की प्रबल इच्छा होने के बावजूद, 20 वर्ष की अवस्था में ही उन्हें गृहस्थ जीवन तथा व्यवसाय में प्रवृत्त होना पड़ा।

सत्य में गहन आस्था रखने वाले श्रीमद् राजचंद्रजी को 23 वर्ष की अवस्था में ही भावनात्मक आध्यात्मिक-अनुभूति आत्म-ज्ञान हुआ। सांसारिक गतिविधियों के बीच भी उन्होंने इस अनुभूति को प्रज्वलित रखा। 28 वर्ष की आयु के उपरांत, उन्होंने वर्ष के 4 से 6 महीने तक का समय गुजरात के जंगलों, पर्वतों तथा निर्जन स्थानों में एकांतवास के रूप में व्यतीत करना शुरू किया तथा सहजतापूर्वक इस कठोर जीवन का पालन किया। असाध्य रोग के कारण श्रीमद्जी का स्वास्थ्य सन् 1900 में अत्यंत खराब हो गया, जिससे वे फिर उभर नहीं पाए। अत्यंत शारीरिक कष्ट के बावजूद, उनका व्यक्तित्व परमानंद से कांतिमय रहता था। उनकी आत्मा ने विक्रमी संवत् 1957 की चैत्र वदी पंचमी के दिन अर्थात् 9 अप्रैल, 1901 को राजकोट में इस नश्वर देह का परित्याग कर दिया। 33 वर्षों के इस अल्पकाल में, उन्होंने न केवल स्वयं आध्यात्मिक साधना के शिखर को छुआ,

बल्कि अन्य अनेक लोगों के लिए भी आत्म-कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया।

श्रीमद्जी के संपर्क में आने वालों में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी थे। गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका चले जाने के बाद भी पत्राचार के माध्यम से उनका साहचर्य बना रहा। इस घनिष्ठ संबंध से गांधीजी के दर्शन पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने सत्य, अहिंसा तथा करुणा की अपनी मजबूत नींव का श्रेय श्रीमद्जी को दिया है। गांधीजी ने अपने लेखों में तथा अपनी आत्मकथा, 'सत्य के प्रयोग' में श्रीमद्जी का उल्लेख किया है। महात्मा गांधी कहते हैं, "इस व्यक्ति ने आध्यात्मिक मामलों में मेरा हृदय जीत लिया है तथा किसी भी अन्य व्यक्ति ने मेरे हृदय पर वैसा प्रभाव कभी नहीं छोड़ा। मैंने अन्यत्र कहा है कि मेरे चरित्र के निर्माण में कवि (श्रीमद्जी) के साथ-साथ रस्किन और टॉल्स्टॉय का योगदान रहा है; परन्तु कवि का प्रभाव काफी गहरा पड़ा है, क्योंकि उनसे मेरे वैयक्तिक और घनिष्ठ संबंध रहे हैं।" (मार्डन रिव्यू, जून 1930)

उनकी अमूल्य रचनाएं 'श्रीमद् राजचंद्र' नामक ग्रंथ में संकलित और प्रकाशित की गई हैं। काव्य-कृति, 'श्री आत्मसिद्धि शास्त्र', श्रीमद्जी की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक है। एक ही बैठक में 1.5 - 2 घंटे में लिखी गई इसकी 142 कविताएं इसमें संकलित हैं, जो दार्शनिक साहित्य की श्रेष्ठकृति हैं। उनके द्वारा विरचित अन्य शोध-प्रबंध, काव्य रचनाएं, लेख, सूक्तियां और उनके व्यक्तित्व भाष्य भी हैं, जिनमें गहन चिन्तन और गहन आत्म-अनुभूति को अभिव्यक्ति प्रदान की गई। धरोहर का एक बड़ा भाग, अपने चाहने वालों को लिखे गए उनके पत्र हैं।

डाक विभाग, श्रीमद् राजचंद्रजी पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ : श्री ब्रह्म प्रकाश विवरणिका/विरूपण



तकनीकी आंकड़े  
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसा
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	: 477640
Stamps Printed	: 477640
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at [http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY\\_3D.html](http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html)

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00